ISSN : 3048-6203 Volume -2| Issue -1| Jan - Jun, 2025

शोध भूमि
शिक्षा एवं शिक्षण शास्त्र विषय की पूर्व-समीक्षित शोध पत्रिका
Page No. : 526-532

एनईपी 2020 के सन्दर्भ में भारतीय ज्ञान प्रणाली का एकीकरण

प्रदीप कुमार यादव
(शोध छात्र)
शिक्षाशास्त्र विभाग ईश्वर शरण डिग्री कॉलेज
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज
ईमेल–pky9451@gmail.com

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य नई शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 का शिक्षार्थियों के समग्र विकास पर ध्यान केंद्रित करके भारतीय शिक्षा प्रणाली को बदलना है। यह नीति शिक्षा प्रणाली को बेहतर बनाने के लिए एक विस्तृत और संयुक्त दृष्टिकोण प्रदान करती है। एनईपी पाठ्यक्रम का एक प्रमुख हिस्सा भारतीय ज्ञान प्रणाली (आईकेएस) है। आईकेएस में विज्ञान, प्रौद्योगिकी, साहित्य, दर्शन, संस्कृति, चिकित्सा (आयुर्वेद) और योग जैसे क्षेत्रों में भारत के विविध और समृद्ध विरासत ज्ञान को शामिल किया गया है। एनईपी अंतःविषय और ट्रांसडिसिप्लिनरी लर्निंग पर जोर देता है, वर्तमान और भविष्य की चुनौतियों से निपटने के लिए आधुनिक ज्ञान को आईकेएस के साथ जोड़ता है। आईकेएस प्राचीन काल से लेकर वर्तमान तक के ज्ञान को कवर करता है। एनईपी स्वदेशी ज्ञान के प्रसार में इसके महत्व को पहचानते हुए आईकेएस को बढ़ावा देने के लिए भाषा संसाधनों और प्रौद्योगिकी के निर्माण को प्रोत्साहित करता है। आईकेएस को एनईपी के साथ एकी.त करने से समकालीन सामाजिक मुद्दों को संबोधित करने और इन विषयों पर आगे के शोध को बढ़ावा देने में मदद मिलेगी। यह विभिन्न समूहों के बीच भारत के समृद्ध और विविध स्वदेशी ज्ञान की समझ और प्रशंसा को भी बढ़ाएगा, आधुनिक तकनीक के समर्थन से पारंपरिक ज्ञान को पुनर्जीवित करेगा।

शब्द कुँजी– भारतीय ज्ञान प्रणाली (आईकेएस), राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020, समग्र विकास

प्रस्तावना

शिक्षा सामाजिक प्रगति की नींव है, जो व्यक्ति और समाज दोनों को आकार देती है। हालाँकि, आधुनिक भारतीय शिक्षा प्रणाली की अत्यधिक रूप से रटने पर बहुत अधिक ध्यान केंद्रित करने और देश की समृद्ध विरासत और विविध ज्ञान प्रणालियों से जुड़ने में विफल रहने के लिए आलोचना की जाती रही है (बत्रा, 2015)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 का उद्देश्य भारतीय ज्ञान प्रणालियों (आईकेएस) के एकीकरण के माध्यम से समग्र विकास को बढ़ावा देकर इसे बदलना है। आईकेएस में आयुर्वेद, योग, पारंपरिक वास्तुकला, खगोल विज्ञान, गणित और साहित्य जैसे क्षेत्र शामिल हैं। उच्च शिक्षा पाठ्यक्रम में आईकेएस को शामिल करने से भारत की बौद्धिक विरासत को संरक्षित करने और सीखने के लिए अधिक समावेशी, सांस्.तिक रूप से आधारित और समग्र .ष्टिकोण बनाने में मदद मिल सकती है (सिंह और कुमार, 2023)। इसमें सम्मिलित हो सकते हैं:

- मूलभूत आईकेएस पाठ्यक्रम शुरू करना
- मौजूदा पाठ्यक्रमों में आईकेएस .ष्टिकोणों को एकी.त करना
- आईकेएस और आधुनिक विज्ञान को संयोजित करने वाले अंत:विषय कार्यक्रम विकसित करना
- आईकेएस डोमेन में अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा देना
- अनुभवात्मक सीखने के अवसर प्रदान करना
- पारंपरिक ज्ञान धारकों और संगठनों के साथ सहयोग करना
- संकाय प्रशिक्षण, शिक्षण सामग्री और समर्पित आईकेएस केंद्रों के माध्यम से क्षमता निर्माण

हालाँकि, आईकेएस का एकीकरण संवेदनशीलता, सम्मान और शैक्षणिक कठोरता के साथ किया जाना चाहिए। इसका लक्ष्य पारंपरिक ज्ञान की प्रामाणिकता को संरक्षित करना है, जबकि प्रासंगिक हितधारकों (मोरोटे एट अल., 2022) के परामर्श से महत्वपूर्ण जांच, संवाद और ज्ञान के सह–निर्माण को प्रोत्साहित करना है।

नई शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य समाज को आवश्यकतानुसार यह ज्ञान प्रदान करना है। भारतीय ज्ञान प्रणाली (आईकेएस) में तीन घटक शामिल हैं:

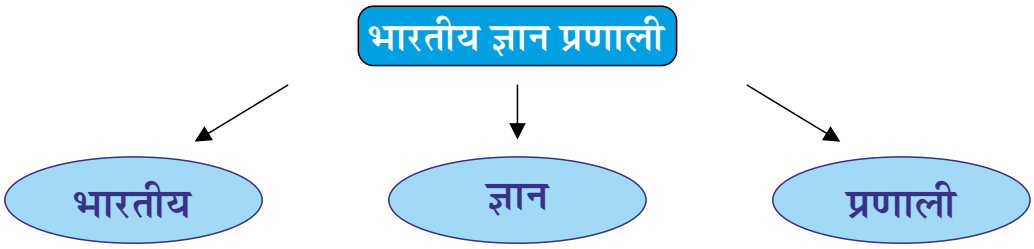

चित्र संख्या: 1 (भारतीय, ज्ञान और प्रणाली)

1. भारतीय :

यह अखंड भारत, अविभाजित भारतीय उपमहाद्वीप को संदर्भित करता है। यह पूर्व में बर्मा से लेकर पश्चिम में आधुनिक अफगानिस्तान, उत्तर में हिमालय और दक्षिण में हिंद महासागर तक फैला हुआ है। मौर्य साम्राज्य की स्थापना में मदद करने वाले चाणक्य और संस्कृत व्याकरण लिखने वाले पाणिनि जैसे महत्वपूर्ण विद्वानों ने प्राचीन भारत (अब पंजाब, पाकिस्तान में) में तक्षशिला विश्वविद्यालय में अपनी शिक्षा प्राप्त की। प्राचीन भारतीय शिक्षा में नालंदा और तक्षशिला जैसे प्रसिद्ध केंद्रों में अठारह विद्या स्थानों या शिक्षण विद्यालयों में अध्यापन शामिल था। भारत की वैश्विक प्रतिष्ठा कला, वास्तुकला, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, शिल्प, इंजीनियरिंग, दर्शन और प्रथाओं में इसके योगदान पर आधारित है। कई विदेशी ज्ञान के लिए भारत आए और इसे पश्चिम और दुनिया के अन्य हिस्सों के साथ साझा किया।

2. ज्ञान :

ज्ञान से तात्पर्य ज्ञान चाहने वालों द्वारा व्यक्तिगत अनुभवों, अवलोकनों, वास्तविक जीवन की समस्याओं का सामना करने और उन्हें हल करने के माध्यम से प्राप्त समझ और ज्ञान से है। ज्ञान साहित्यिक और गैर–साहित्यिक दोनों रूपों में मौजूद हो सकता है। यह समझ नए सिद्धांतों, रूपरेखाओं और साहित्यिक कार्यों के माध्यम से व्यवस्थित रूप से स्थानांतरित की जाती है, जो मौन ज्ञान को स्पष्ट ज्ञान में बदल देती है।

3. प्रणाली :

एक प्रणाली एक सुव्यवस्थित कार्यप्रणाली और वर्गीकरण योजना को संदर्भित करती है जिसका उपयोग ज्ञान के एक निकाय तक पहुँचने के लिए किया जाता है। संहिताकरण और वर्गीकरण ज्ञान चाहने वाले की आवश्यकताओं, रुचियों और क्षमताओं पर आधारित होते हैं, जिससे उन्हें ज्ञान के समग्र निकाय से अंतर्दृष्टि

प्राप्त करने और प्राप्त करने की अनुमति मिलती है। इससे उन्हें यह समझने में मदद मिलती है कि विभिन्न ज्ञान घटक तार्किक रूप से एक दूसरे के पूरक कैसे हैं।

आईकेएस प्राचीन और समकालीन ज्ञान का एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक व्यवस्थित हस्तांतरण है। इसमें वर्तमान और भविष्य की चुनौतियों का समाधान करने के लिए विभिन्न डोमेन से ज्ञान शामिल है। यह ज्ञान साहित्यिक और गैर–साहित्यिक दोनों रूपों में मौजूद है। साहित्यिक संसाधनों में वैदिक और उससे संबंधित साहित्य (सनातन धर्म, मुख्य रूप से संस्कृत में), अन्य धार्मिक परंपराओं (बौद्ध धर्म और जैन धर्म) पर संसाधन और भारतीय भाषाओं और बोलियों में ज्ञान शामिल हैं। गैर–साहित्यिक संसाधन देश भर में मौखिक परंपराओं में पाए जाते हैं (बी., रजत, और आर.एन., 2022)।

1.1 भारतीय ज्ञान प्रणालियों के माध्यम से समग्र विकास

भारतीय ज्ञान प्रणालियों को शिक्षा में एकीकृत करने से शिक्षार्थियों में समग्र विकास को बढ़ावा देने की संभावना अत्यधिक है। पारंपरिक दृष्टिकोण के विपरीत जो ज्ञान को अलग–अलग क्षेत्रों में विभाजित करता है, भारतीय ज्ञान प्रणालियाँ एक परस्पर जुड़ी हुई विश्वदृष्टि प्रदान करती हैं, जो समाज और प्रकृति के साथ व्यक्ति के सामंजस्यपूर्ण सह–अस्तित्व पर जोर देती हैं (चांग और चांग 2023)। उदाहरण के लिए, योग और ध्यान जैसी प्रथाएँ न केवल शारीरिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देती हैं बल्कि भावनात्मक लचीलापन और मानसिक स्पष्टता भी पैदा करती हैं। इसी तरह, आयुर्वेद, अपने समग्र उपचार दृष्टिकोण के साथ, मन, शरीर और आत्मा को परस्पर जुड़ी हुई संस्थाओं के रूप में देखता है, जो स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं को गहराई से संबोधित करता है। इसके अतिरिक्त, वेदांत और धर्म जैसी भारतीय ज्ञान प्रणालियों के दार्शनिक आधार सहानुभूति, करुणा और नैतिक आचरण के मूल्यों को सिखाते हैं, सामाजिक जिम्मेदारी और परस्पर जुड़ाव की भावना को बढ़ावा देते हैं। शिक्षा में इन विविध तत्वों को एकीकृत करके, शिक्षार्थी न केवल अकादमिक ज्ञान प्राप्त करते हैं बल्कि संतुलित, उद्देश्यपूर्ण जीवन जीने के लिए उपकरण भी प्राप्त करते हैं। यह उन्हें खुद के लिए, अपने समुदायों और बड़े पैमाने पर दुनिया के लिए सकारात्मक रूप से योगदान करने के लिए सशक्त बनाता है।

2. एनईपी 2020 : एक आदर्श बदलाव

अक्टूबर 2020 में, एआईसीटीई मुख्यालय ने आईकेएस प्रभाग की स्थापना की, जो शिक्षा मंत्रालय (एमओई) का एक हिस्सा है। आईकेएस रिपॉजिटरी में 29 शोध केंद्र, 17 शिक्षक प्रशिक्षण केंद्र और 7 भाषा केंद्र शामिल हैं। इन अंतःविषय अनुसंधान केंद्रों का उद्देश्य आगे के शोध और सामाजिक अनुप्रयोगों के लिए ज्ञान को संरक्षित और प्रसारित करना है। शिक्षक प्रशिक्षण केंद्र शिक्षकों को स्वदेशी और पारंपरिक ज्ञान को समझने के कौशल से लैस करेंगे, जबकि भाषा केंद्र भाषाई और साहित्यिक ज्ञान को बढ़ावा देंगे। ये केंद्र विलुप्त होने के कगार पर खड़ी भाषाओं को पुनर्जीवित करने में भी मदद करेंगे, जिसमें राष्ट्र को बदलने के लिए महत्वपूर्ण ज्ञान शामिल है (''भारतीय ज्ञान प्रणाली (आईकेएस) '') ।

एनईपी 2020 व्यापक शिक्षा (देवी और श्रीदेवी) के लिए स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों को अपनाकर भारत के शैक्षिक दर्शन में एक महत्वपूर्ण बदलाव का प्रतीक है। विभिन्न विषयों में भारतीय ज्ञान प्रणालियों के एकीकरण की वकालत करके, नीति का उद्देश्य शिक्षार्थियों में गर्व और सांस्कृतिक पहचान की भावना पैदा करना है, साथ ही उन्हें 21वीं सदी के लिए प्रासंगिक कौशल प्रदान करना है।

2.1 भारतीय ज्ञान प्रणालियों से संबंधित एनईपी 2020 की मुख्य विशेषताएँ:-

- **बहुविषयक दृष्टिकोण:** एनईपी 2020 सीखने के लिए बहुविषयक दृष्टिकोण को बढ़ावा देता है, छात्रों को विविध विषयों का पता लगाने और विभिन्न ज्ञान प्रणालियों से अंतर्दृष्टि को एकीकृत करने के लिए प्रोत्साहित करता है। यह रचनात्मकता, आलोचनात्मक सोच और जटिल मुद्दों की समग्र समझ को बढ़ावा देता है।

- **भारतीय भाषाओं को बढ़ावा:** नीति भारतीय भाषाओं के प्रचार और संरक्षण का समर्थन करती है, स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों को बनाए रखने में उनके महत्व को पहचानती है। बहुभाषी शिक्षा प्रदान करके, एनईपी 2020 सुनिश्चित करता है कि शिक्षार्थियों के पास सांस्कृतिक और भाषाई संसाधनों की एक विस्तृत श्रृंखला तक पहुँच हो।

- **अनुभवात्मक सीखने पर जोर:** एनईपी 2020 अनुभवात्मक सीखने के तरीकों को प्राथमिकता देता है, जैसे कि व्यावहारिक गतिविधियाँ, फील्ड ट्रिप और प्रोजेक्ट आधारित सीखना। यह भारतीय ज्ञान प्रणालियों के सिद्धांतों के अनुरूप है, जो प्रत्यक्ष अनुभव और व्यावहारिक अनुप्रयोग के माध्यम से सीखने पर जोर देते हैं।

- **पारंपरिक कलाओं और शिल्पों का एकीकरण:** नीति पारंपरिक कलाओं और शिल्पों को पाठ्यक्रम में एकीकृत करने के महत्व पर प्रकाश डालती है, सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने और पारंपरिक ज्ञान को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचाने में उनकी भूमिका को स्वीकार करती है।

3. आईकेएस को एकीतृत करने में चुनौतियाँ

भारतीय ज्ञान प्रणाली (आईकेएस) को शिक्षा प्रणाली में एकीकृत करने से बहुत अवसर मिलते हैं, लेकिन इससे कई चुनौतियाँ भी सामने आती हैं, जिनका समाधान किया जाना चाहिए।

- **पाठ्यक्रम विकास और कार्यान्वयन:** आईकेएस को पाठ्यक्रम में शामिल करने के लिए एक सुनियोजित और व्यापक दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। शिक्षकों और नीति निर्माताओं को विभिन्न विषयों में प्रासंगिक आईकेएस पहलुओं का सावधानीपूर्वक चयन और एकीकरण करने के लिए सहयोग करने की आवश्यकता है। इस प्रक्रिया में व्यापक शोध, विशेषज्ञों के साथ परामर्श और एक सहज और सार्थक एकीकरण सुनिश्चित करने के लिए उपयुक्त शिक्षण सामग्री का विकास शामिल हो सकता है।
- **शिक्षक क्षमता निर्माण:** आईकेएस एकीकरण की सफलता शिक्षकों की तैयारी और क्षमता पर बहुत अधिक निर्भर करती है। शिक्षकों को कक्षा में आईकेएस अवधारणाओं और प्रथाओं को प्रभावी ढंग से शामिल करने के लिए आवश्यक ज्ञान, कौशल और शिक्षण विधियों से लैस करने के लिए व्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम तैयार किए जाने चाहिए। आईकेएस– एकीकृत पाठ्यक्रम के प्रभावी कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने के लिए निरंतर व्यावसायिक विकास और समर्थन आवश्यक होगा।
- **पूर्वाग्रहों और गलत धारणाओं को संबोधित करना:** भारतीय ज्ञान प्रणाली को कई तरह के पूर्वाग्रहों, गलत धारणाओं और यहां तक कि कुछ अकादमिक और बौद्धिक हलकों द्वारा खारिज किए जाने का सामना करना पड़ा है। इन पूर्वाग्रहों पर काबू पाना और आधुनिक संदर्भ में आईकेएस की विश्वसनीयता और प्रासंगिकता स्थापित करना एक महत्वपूर्ण चुनौती होगी। गलत धारणाओं को दूर करने और आईकेएस के मूल्य और योगदान को उजागर करने के लिए कठोर शोध, अकादमिक चर्चा और जागरूकता अभियान आवश्यक होंगे।
- **आधुनिकता और परंपरा को संतुलित करना:** आईकेएस को शिक्षा प्रणाली में एकीकृत करने के लिए पारंपरिक ज्ञान को संरक्षित करने और इसे आधुनिक आवश्यकताओं के अनुकूल बनाने के बीच संतुलन बनाना होगा। नीति निर्माताओं और शिक्षकों को विभिन्न आईकेएस अवधारणाओं और प्रथाओं की प्रासंगिकता और प्रयोज्यता की सावधानीपूर्वक जांच करनी चाहिए, यह सुनिश्चित करते हुए कि वे समकालीन चुनौतियों के साथ संरेखित हों और छात्रों के साथ प्रतिध्वनित हों।
- **समावेशीपन और पहुंच सुनिश्चित करना:** भारतीय ज्ञान प्रणाली विविध है, जिसमें विभिन्न समुदायों, क्षेत्रों और परंपराओं का योगदान शामिल है। शिक्षा में प्ज्ञै एकीकरण सुनिश्चित करना सभी शिक्षार्थियों के लिए समावेशी और सुलभ है, चाहे उनकी सामाजिक–आर्थिक, सांस्कृतिक या भौगोलिक पृष्ठभूमि कुछ भी हो, महत्वपूर्ण है। आईकेएस– एकीकृत पाठ्यक्रम के भीतर विविध दृष्टिकोणों और अभ्यावेदनों को शामिल

करने के लिए रणनीतियाँ विकसित की जानी चाहिए।

- **शैक्षणिक कठोरता और गुणवत्ता बनाए रखना:** आईकेएस को शिक्षा प्रणाली में एकीकृत करते समय, शैक्षणिक कठोरता और गुणवत्ता के उच्च मानकों को बनाए रखना आवश्यक है। एकीकरण को पाठ्यक्रम की वैज्ञानिक और विश्लेषणात्मक नींव से समझौता किए बिना शिक्षा की समग्र गुणवत्ता को बढ़ाना चाहिए। पारंपरिक ज्ञान को आधुनिक शिक्षण दृष्टिकोण और शोध पद्धतियों के साथ संतुलित करना एक महत्वपूर्ण चुनौती होगी।
- **अंत:विषय सहयोग और भागीदारी:** सफल आईकेएस एकीकरण के लिए शिक्षाविदों, शोधकर्ताओं, पारंपरिक ज्ञान धारकों और सामुदायिक प्रतिनिधियों सहित विभिन्न हितधारकों के बीच घनिष्ठ सहयोग और भागीदारी की आवश्यकता होती है। इन अंत:विषय साझेदारी को बढ़ावा देना और ज्ञान और विशेषज्ञता के आदान–प्रदान को सुविधाजनक बनाना आईकेएस– एकीकृत पाठ्यक्रम को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए महत्वपूर्ण होगा।

4.एनईपी और आईकेएस समावेश

एनईपी 2020 ने इस बात पर जोर दिया है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली (आईकेएस) पाठ्यक्रम का हिस्सा होगी और इसे वैज्ञानिक रूप से शामिल किया जाएगा। आदिवासी ज्ञान के साथ–साथ आईकेएस को गणित, इंजीनियरिंग, दर्शन, योग, चिकित्सा, खेल, साहित्य, भाषा और कई अन्य क्षेत्रों जैसे विषयों में शामिल किया जाएगा। एनईपी ने आदिवासी नृवंशविज्ञान प्रथाओं, वन प्रबंधन और जैविक और प्राकृतिक खेती में विशिष्ट पाठ्यक्रमों पर ध्यान केंद्रित किया है। एनईपी के तहत, आईकेएस को माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के लिए एक वैकल्पिक पाठ्यक्रम के रूप में पेश किया जाएगा।

इन विषयों को आधुनिक तकनीकों, मजेदार खेलों और विभिन्न राज्यों के बीच सांस्कृतिक आदान–प्रदान कार्यक्रमों का उपयोग करके पढ़ाया जाएगा। एनईपी बहुभाषावाद पर भी जोर देता है, और आईकेएस रिपॉजिटरी में कई भाषाएँ हैं। छात्रों को उनकी मूल भाषाओं में पाठ्यक्रम पढ़ाया जाएगा, और सबसे प्राचीन भाषा संस्कृत सभी को पढ़ाई जाएगी। विभिन्न भाषाओं को सीखने से छात्रों को देश की समृद्ध और विविध संस्कृति की समझ हासिल होगी। यह बहुभाषी दृष्टिकोण संवैधानिक प्रावधानों के पहलुओं को शामिल करेगा और पूरे देश में एकता और अखंडता को बढ़ावा देगा (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020)। उदाहरण के लिए, भारतीय गणित के इतिहास को नियमित गणित कक्षाओं में आसानी से शामिल किया जा सकता है। वास्तुकला, दर्शन और आयुर्वेद जैसे विषयों पर भी यही दृष्टिकोण लागू किया जा सकता है। यह क्रमिक एकीकरण ही एनईपी का लक्ष्य है।

5. शिक्षा में प्ज्ञै के सफल एकीकरण के लिए रणनीतियाँ

चुनौतियों का समाधान करने और शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणाली (आईकेएस) के प्रभावी एकीकरण को सुनिश्चित करने के लिए, निम्नलिखित रणनीतियों पर विचार किया जा सकता है:

- **व्यापक पाठ्यक्रम विकास:** एक अच्छी तरह से संरचित पाठ्यक्रम विकसित करें जो आईकेएस के प्रासंगिक पहलुओं को विभिन्न विषयों में सहजता से एकीकृत करता है। इस प्रक्रिया में व्यापक शोध, विशेषज्ञ परामर्श और आईकेएस के दायरे और गहराई की गहन समझ शामिल होनी चाहिए।
- **शिक्षक क्षमता निर्माण:** शिक्षकों को आईकेएस अवधारणाओं और प्रथाओं को प्रभावी ढंग से पढ़ाने के लिए आवश्यक ज्ञान, कौशल और शैक्षणिक दृष्टिकोण से लैस करने के लिए मजबूत शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में निवेश करें। इन कार्यक्रमों को प्ज्ञै और शिक्षाशास्त्र के विशेषज्ञों के सहयोग से तैयार किया जाना चाहिए।
- **सहयोगी अनुसंधान और संवादों को बढ़ावा दें:** आईकेएस की वैज्ञानिक और व्यावहारिक प्रासंगिकता का पता लगाने और उसे मान्य करने के लिए शिक्षाविदों, पारंपरिक ज्ञान धारकों और समुदाय के प्रतिनिधियों

के बीच सहयोगी अनुसंधान पहलों को प्रोत्साहित करें। आईकेएस की गहरी समझ और प्रशंसा को बढ़ावा देने के लिए संवाद और ज्ञान साझाकरण प्लेटफॉर्म की सुविधा प्रदान करें।

- **आकर्षक शिक्षण:** अधिगम सामग्री विकसित करें: छात्रों को आधुनिक और संबंधित तरीके से आईकेएस सिद्धांतों और अनुप्रयोगों को प्रभावी ढंग से संप्रेषित करने के लिए पाठ्यपुस्तकों, मल्टीमीडिया संसाधनों और व्यावहारिक गतिविधियों जैसी आकर्षक और इंटरैक्टिव शिक्षण अधिगम सामग्री बनाएँ।
- **आईकेएस के लिए उत् ष्टता केंद्र स्थापित करें:** आईकेएस के लिए समर्पित उत्कृष्टता केंद्र विकसित करें, जो अनुसंधान, शिक्षा और आईकेएस से संबंधित ज्ञान और प्रथाओं के प्रसार के लिए केंद्र के रूप में काम कर सकते हैं। ये केंद्र शिक्षा में आईकेएस एकीकरण को आगे बढ़ाने के लिए शैक्षणिक संस्थानों, सामुदायिक संगठनों और नीति निर्माताओं के साथ सहयोग कर सकते हैं।
- **डिजिटल प्रौद्योगिकियों का लाभ उठाएँ:** आईकेएस एकीकृत शैक्षिक सामग्री की पहुँच और पहुँच को बढ़ाने के लिए, विशेष रूप से दूरस्थ और कम सेवा वाले क्षेत्रों में, ऑनलाइन शिक्षण प्लेटफॉर्म, वर्चुअल सिमुलेशन और मल्टीमीडिया संसाधनों जैसी डिजिटल प्रौद्योगिकियों का उपयोग करें।
- **जागरूकता और वकालत को बढ़ावा दें:** आईकेएस के महत्व, प्रासंगिकता और योगदान के बारे में जानकारी प्रसारित करने के लिए व्यापक जागरूकता और वकालत अभियान लागू करें। ये अभियान छात्रों, अभिभावकों, शिक्षकों, नीति निर्माताओं और आम जनता को प्श्नै की गहरी समझ और प्रशंसा को बढ़ावा देने के लिए लक्षित कर सकते हैं।
- **अंतरविषयक भागीदारी विकसित करें:** शिक्षा प्रणाली में प्रभावी आईकेएस एकीकरण के लिए ज्ञान, विशेषज्ञता और सर्वोत्तम प्रथाओं के आदान–प्रदान को सुविधाजनक बनाने के लिए शिक्षाविदों, अनुसंधान संस्थानों, पारंपरिक ज्ञान धारकों और सामुदायिक संगठनों के बीच मजबूत अंतःविषय भागीदारी स्थापित करें।
- **समावेशी और न्यायसंगत कार्यान्वयन सुनिश्चित करें:** यह सुनिश्चित करने के लिए रणनीतियाँ विकसित करें कि आईकेएस एकीकरण सामाजिक–आर्थिक, सांस्कृतिक या भौगोलिक पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना सभी शिक्षार्थियों के लिए समावेशी और सुलभ हो। इसमें आईकेएस एकीकृत पाठ्यक्रम के भीतर विविध दृष्टिकोणों और अभ्यावेदनों की पहचान करना और उन्हें शामिल करना शामिल हो सकता है।
- **निरंतर मूल्यांकन और परिशोधन:** शिक्षा प्रणाली में आईकेएस एकीकरण की प्रभावशीलता का आकलन करने के लिए मजबूत निगरानी और मूल्यांकन तंत्र लागू करें। आईकेएस– एकीकृत शिक्षा में निरंतर सुधार और प्रासंगिकता सुनिश्चित करने के लिए हितधारकों से नियमित रूप से फीडबैक एकत्रित करें, डेटा का विश्लेषण करें और पाठ्यक्रम और कार्यान्वयन रणनीतियों को परिष्कृत करें।

निष्कर्ष

भारत की शिक्षा प्रणाली में भारतीय ज्ञान प्रणाली (आईकेएस) को शामिल करने से हितधारकों को अपनी सांस्कृतिक विरासत को समझने और पर्यावरण के प्रति गहरी समझ विकसित करने में मदद मिल सकती है। चूँकि आईकेएस व्यावहारिक, अनुभवात्मक ज्ञान पर आधारित है, इसलिए यह छात्रों को जलवायु परिवर्तन और खाद्य सुरक्षा जैसी वास्तविक जीवन की चुनौतियों से निपटने के लिए तैयार कर सकता है। हालाँकि, इस एकीकरण के साथ कई चुनौतियाँ भी जुड़ी हैं, जिन्हें पहले संबोधित करने की आवश्यकता है।

भारत सरकार ने एनईपी 2020 के तहत आईकेएस को पाठ्यक्रम में एकीकृत करने के लिए कदम उठाए हैं। शिक्षकों के लिए उचित प्रशिक्षण आवश्यक है ताकि वे आईकेएस अवधारणाओं को प्रभावी ढंग से पढ़ा सकें। आईकेएस पर उपलब्ध डेटा को सूचना प्रौद्योगिकी की मदद से सुव्यवस्थित करने और हितधारकों की जरूरतों और क्षमताओं के अनुसार सुलभ बनाने की आवश्यकता है। यह एकीकरण रातोंरात नहीं हो सकता, क्योंकि भारत में हजारों वर्षों में स्वदेशी ज्ञान प्रणालियाँ विकसित हुई हैं। यह एक क्रमिक प्रक्रिया होगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:

- नरेश, चंदेल (2024) इंडियन नॉलेज सिस्टम एंड एनईपी अ ब्रीफ एनालिसिस जर्नल ऑफ इमर्जिंग टेक्नोलॉजीज एंड इनोवेटिव रिसर्च (जेईटीआईआर), वॉल्यूम– 11, इशू – 1, पृष्ठ संख्या– 260– 263, आईएसएसएन : 2349–5162 https//www-jetir-org/papers/JETIR2401331.pdf
- प्रसेनजित, दास (2023). नेशनल एजुकेशन पालिसी करंट इश्यूज एंड रिमागिनिंग द फ्यूचर ऑफ हायर एजुकेशन. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन साइकोलॉजी 11 (3) : 3880–3889. https//www-research gate.net/publication / 374152057 National Education Policy 2020 Current Issues and Reimagining the Future of Higher Education
- रंजीत कुमार, दास (2024). इंडियन नॉलेज सिस्टम एंड नेशनल एजुकेशन पालिसी 2020. इंटीग्रेटेड जर्नल फॉर रिसर्च इन आर्ट्स एंड हमनीटीएस, 4(4), 47–51. https//www.ijrah.com/index.php/ijrah/article/view/518
- सत्यजीत बराल (2024). इंटेग्रटिंग इंडियन नॉलेज सिस्टम फॉर होलिस्टिक डेवेलोपमेंट थ्रू एनईपी. ग्लोबल ऑनलाइन इलेक्ट्रॉनिक इंटरनेशनल इंटरडिसिप्लिनरी रिसर्च जर्नल (GOEIIRJ), वॉल्यूम– 13, इशू–5, पृष्ठ संख्या– 415–420, आईएसएसएन 22785639. https//www.research gate.net/publication/380932116 Integrating Indian Knowledge Systems for Holistic Development through NEP 2020
- शैलजा, गौर (2024). इंटेग्रटिंग इंडियन नॉलेज सिस्टम ईंटो मॉडर्न एजुकेशन एन एनालिसिस ऑफ द नेशनल एजुकेशन पालिसी इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च, वॉल्यूम– 10, इशू 6. https//eprajournals.com/MR/article/13473
- सुजान, बिस्वास (2021). इंडियन नॉलेज सिस्टम एंड एनईपी स्कोप, चौलेंजेज एंड ओप्पोरचुनिटीज. नेशनल जर्नल ऑफ हिंदी एंड संस्कृत, य 1(39) 179–183. https%//sanskritarticle.com/wp&content/uploads/51&39&Dr.Sujan Biswas.pdf